

C-50

y

C

50

(12) folios

50
—
472

HP
24

सुर राम य पायः

श्रीगणेशाय नमः॥ नत्वा गुरुं स ता लोकेश्वरशास्त्राणि भरिषः॥ वक्ष्ये यत्तु ज
 यो पापं धार्मिकाणां महिम्नः॥ १॥ वरुधा विधेयं सदा शिवो ज्ञेयः शास्त्राणि ते देव
 वक्ष्यतां न॥ भगवान् यमेव वेदसम्यग्गुरुमाजीनुज तोषेः सुलोकः॥ २॥ वक्ष्याम्यहं
 यद्गुरुं किं वनसर्वशारमे ता वेदवपरिचिन्त्यन्त्यः प्रवृत्तः॥ एकोऽपि को हि महिम्नो लपतं
 गदीयलोलां मुदनु भवतु स्फुरको तु केन॥ ३॥ नेते देवदुर्धिन हा यज्ञा तुं ज्ञानं गुप्तं तद्धि
 सम्यग्फलदाय॥ स्थाने हि स्थाप्यमाने वाचदेवी को यानि॥ ४॥ हि न्नोच्चैरप्यपि न
 यावन्तापदीपमाना प्रभवेत्॥ ५॥ कल्पते ते वसुफलं स्थानेऽप्यस्तु चिन्ता कानि
 शास्त्राण्युपकारस्य पदं हि साधुखे॥ ६॥ शपमेपु गंङ्गाकगतिं दत्तो दत्त हृदय

॥ १ ॥ सगर्वरागा निनाचः ॥ काधास्त्रा ली व्यतेऽभं मपि शुभं पोर्ता मवरोत्तथ सं
 ख्ये ॥ ॥ २ ॥ रसे शेषे व्यशेषे विजयप्रभयो स ॥ प्रिशेषे रात्रि ४ स्तो ६ मा ५ सा ७ ॥ नी
 ३ का १ रि २ जे ता क्रमत ३ इह महो ग्ना म म तु क्त मा धैः ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

सं० २०

रः कुलाकुलगराः स्वास्मि जपाथं कुलसेमाख्यास्थितिभनिशेषतिषयो युग्माकु
 जोमार्गे वा सं० धो न्यो धं ल सं० को वि ज प ते त स्मि न प्र पा ता धु व म ॥ ८० ॥ पं० आ रा
 ३० श्वरा क ४३ ध भु व भु व ने ध ३ शो ज व्य ज ने सु स्प न न्दा दै स्ति धि क पि ॥ १० ॥ व र न्तो
 प न्तरा मो ग भा जः ना म्ना य लो कु मारो यु व स ज र म् ता स्त्वा दि व रा श्व रा न्ते धु त्क

क	ख	ग	गा	ज	ति	ते	र	त	र	वि
प	फ	३	३	३	६	६	८	८	८	८५
श्र	श्रा	ई	ई	५	५	८	८	श्री	श्री	श्री
क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ट	ठ	ड
ढ	रा	त	थ	द	ध	न	प	फ	व	भ
न	य	३	ल	व	श	ष	स	ह	०००	००

तु	ला	रि	भ	ज	ती	ध	भु	गा	न	क
६	३	२	४	८	६	८	४	३	००	१
अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ	अं
क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ट	ठ	ड
ढ	ण	त	थ	द	ध	न	प	फ	ब	भ
म	य	र	ल	व	श	ष	स	ह	००	००

यो मुवा नोपय परतरयोः पुक्य तां दिरा म्त्वा चि ॥११॥ भो मे नयो तो श शि की
 स्य गुरो म् जो स्ते क्षे त्रे श नै रु द य नो य न वं श के ऽ जा त् भा रे २४ के तु २१ पर नो

स०१०

२	५	२	४	७	१	३	२	०	कुलाकुल
अ	म	क	च	६	त	प	य	श	म० आ
आ	ल	ख	छ	०	थ	फ	र	ष	अवि ०
इ	ए	ग	ज	३	द	व	ल	ह	शत १००
ई	ओ	अ	भ	६	ध	न	व	०	६२
उ	ओ	५०	म	रा	न	म	००	०	संधिकारः
उ	अं	०	०	०	०	०	०	०	
स	अः								

३.

अकुल

कुलचि० वि०	१।३।५।७	८	५	६	४	७	१	३	२	
जे० कघा०	८।११।१३	अ	क	च	त	य	प	श		
अ० पभा	१५।१७	उ	ख	घ	ठ	ड	फ	र	ष	
अ० क	१।३।५।	५	ग	ज	द	ब	ल	क्ष		
म० पु०	म० रणी पु	६	ध	ने	ढ	ध	भ	व	ह	
म० पु फा०	अस्तेषा	ओ	५०	न	ल	म	व	०	०	
४।८।१२।	ह स्वाती			शा					०	०
१४।माशु	जायी जयः									
स्थाशु जैप११										

सं० २०

४

तिमभारिसप्तस्वदित्यस्त्यदिमुखाश्चपिपञ्चकेषु ११ रूपा १२ मथहावनर्तुबुचतेत
त्कोदभागाज्जरेमुत्पावाध्ययनेत्यश्रीमोकल्लाभमपोपदनयो ॥ राधेभा
भाइपरेसहस्रशरिषाषाठनभस्पुनैधौपषेथैरपिशुक्रउज्जि ७२ इमाधादयो
रस्तथा १३ ॥ मात्रानाममुख्यर्यजैवतुत्तद्वचमत्रादिसिद्धोह (नय संख्येक्यं ते
य १३ ॥ संख्यया १३ भि ४ यशोकद्यामिजीवाच्छुभे ॥ पिराज्जात्रिकैवेति
कैकापुहते शेषश्चमस्तत् ॥ कतौमात्राणि हेपिराज्जिनेनगरुज्जैक्या
न्मपुहद्वौकिकः १३ योगाद्योगभजनवरीवचसधमावहेत ॥ विशे

४

सि	न	ठ	र	व	ले	ह	य	१०	११	रा	मि	म	कुं	०	२१	२१
२	थ	ह	अ	फ	र	स	४	२६	११	गुं	ने	व	तुं	०	२१	२१
७	ज	के	ते	प	य	ष	३	२६	११	वुं	०	मी	ध	०	२१	२१
६	ख	उ	७	न	स	श	२	१	११	उं	वं	सिं	सिं	क	२१	२१
३	फ	४	३	अ	भ	व	१	६	११	मो	स	मे	व	सिं	२४	२१

पातश्चसंज्ञेमेमहीवरी०॥स्वरज्जरी४॥तेषामचात्रुप०भ४रा२प०मितिह्रांवनाना-
 न्नोरात्रान्तुमितितामपुहताएथक॥साहिनामपतिर्विजायमाहताधिकसातुत्यास
 मंचसमरंयदिचापिसंधि॥१५॥पक्षादित्यंततश्चते३वसुखंजयेद्यनिजयस्तुधाता
 त॥स्यादाधयोर्जातिमयोश्चसत्रुकात्रात्रोनाभ्याभमाददीत॥१६॥एसानितःशि

सं० १०

तकुजशन्तर्कगहराशयः प्रतीचीन्तो ॥ गुरुगहपोस्तुरत ॥ रगिश्चो नगहपोस्तुवा

पिध्याम ॥ ११ ॥

अ	इ	उ	ए	ओ	अ	इ	उ	ए	ओ	
क	ख	ग	घ	च	१६	५	५	५	५	
क	ख	ग	घ	च		५	अ			
क	ग	ग	ट	ठ		५	ओ	३		
उ	ठ	त	थ	द			उ			
ध	न	प	फ	ब						
म	न	य	र	ल						
व	श	ष	स	ह						

रतिदिशावा लकुमातदिव

शु २१७	म ११८	श ११११	२१	४१०	१५	१	४	१	०	०	०
०१४	राशिस्वरि	२५	२५	४४	३६	२	३३	६	०	०	०
५ ३६	४	८५	४४	३६	३६	६	६	३	०	०	०

होती पावा मार्कित एव या मेतु ती पाश्चात् तस्तु ती पाश्चर्कः प्रतीची प्रभृति निहंति प्रा
 गोतमा मा ६ पुगे न पा म्या म्या ॥ १८ ॥ इति दिशि दिशं च नृपा मे द्या मे निहनि नो ग सिं हो
 धन्वि त था क न्या मिथु नो क्रमेणो वा ॥ १९ ॥ गज रवो ६ प्रहरे श जने इत स्पथ दिवा ति
 शिव ॥ यक्षी यक्षीं ह न्या ज म्पु रव पा श श भान र रो ॥ २० ॥ पक्षे ६ को यदि दिने रो ५ पि
 पुरतः दना या ध नो मे ज पः ॥ किं त्वर्क व ह ती ह या पि नि वि धो वा ह स्थ ते स्था पि नि का
 पा पक्ष ग ६ दिने रा नि शि श शी नो मे ज ती वा ज पी या तु श च न्व व ह पर स्प तु र व वी मे

सं० २०

६

शशीकक्षको ॥२१॥ प्राचीमुदीची वाचने गते स्थायी जयो भवेत् ॥ प्रतीचींदक्षि
 रांप्राप्तेयायी विजयमाप्नुयात् ॥२२॥ वायुपिच्छदक्षिणोचवहस्तुचपते
 वत्तम ॥ सत्सुखीनश्चवामश्चमहताभंगसचकः ॥२३॥ प्रगतांतांतकशंभया
 शिऊतभुक्तयोनास्तपर्यतोदिशोयामार्कुरण्डरत्तिपाशिककुंभोऽसौवर्क्य
 कीनिशि ॥ पच्छदक्षिणरातः शुभोदिविदिक्तोऽसौतप्यत्तप्यव्रजानेशावा

कायवनेन्दु ॥
 राक्षसहिमज
 गिनप्रतीचीदिशो
 ॥२४॥

८	२३	मं३	४	९	६	८	५	२	००
३०	८	११	७	६	३	३	निशा वाम	७	००
२	०	८१३	२	५	८	६	९	४	००
१०		५							
११५	६२५	७४							
७	१४	१२							

प्राक्चोमानलरदोवाक्याशिवापिष्येशादिकदृष्टीतेतिथिमिस्तिथिचदतोर्ध्वैरैराव
 तुयो/गिनीशस्ता २५॥ वृत्तीकोमारीवारहीवेस्मयथोनीचा। स्याचुराणिकामाहस्व
 रोमाहा ११ म्यामिधारवाचा ॥ २६ ॥ पथे २ दिनेरायोगिनीराहुपुतास्येकोयंशत्रुल
 द्धंनिहन्ति॥ श्रव्यं सर्वभ्योवलेभ्यस्तदेतत्सधनयोयंसर्वसम्पदाय २७ ॥ हाटलं ३ तं ६
 का १ भ ४ स ७ ख र यामरलेस्तुकाः सूर्यादिवासरगतोपुष्टिवर्जनीयाः॥ भा ४ सा ७
 र २ मे ५ द ८ सुतियामरलोस्तुकाः सूर्यनिभानिधारक्रमदयिनरः स्वहितार्थम्

भ ३ मे २ ॥ २८ ॥

हा	ल	त	का	भ	स	ख	०	भ	सा	र	मे	द	ल	ति	०००
८	३	६	९	४	७	२	०	४	७	२	५	८	३	६	०००
२	५	८	१	४	७	२	०	४	७	२	५	८	३	६	०००

स०५०

२	वं	मं	७	५	३	१	०
७	६	५	४	३	२	१	०
७	५	५	४	३	२	१	०

विनिवेशपश्चात्पुनरुक्तिरास्थानगतान्क्रमेणायामाहर्भोगा
 न्निरस्तियस्यांतदानेज्यात्तुंमंतदात्ताम॥२७॥वाशरं
 भाद्वःत्वाध्यामापत्याश्चवारपादोरा॥रविशितवुधेन्दु
 शनिगुरुभान्तोमारेयगस्पसवर्ज्याः॥३०॥वामांशे३ज

विरुधयामरुजप्रभागकेगुंजोरहोस्यातुकयाधरेश्रुतिशिरोहस्तप्रहरोरखेः॥च
 द्रास्यभुजद्वेप्रहरराम॥शत्रुग्रहस्यापितुस्याद्वातकिहोरयाहृदिमुखेखज्रादिसंक्ष
 धुयम॥३१॥जनाद्राशेचपुंशकपरि७१२कपि११नव१०धो८६८भ९मापत६खेहा
 हन्पुर्नवापिद्विषमथसहसामधिवन्नेसहस्रैवक्षोजेचोरुदेवशेगुदाइतितदनुंयंवि

दोहिराभागवास्तुः सुनुः शर्कः खलसमनिसगः करारु करारु सयेव ॥ ३२ ॥ आशदिभि
 तु नाछरि च के पद्ये क नाछा स्युः नायार्क च नूभाति प्रधेनेत रहस्य गद्य नात ॥
 ३३ ॥ शनि चन्द्रा गुरुं सूर्य शितो कुज बुधो सृजेता चतुर्दि ॥ ३४ ॥ निषेध पा मेश लं वि
 शेव ॥ ३४ ॥ धिष्ट धाम भुक्ते नाछा नरवारक्षी परिशेष वषैर्जतांश दपि तत्का नश
 शिभमिरव्याधा गति नुति खस्तु धटिक ॥ ३५ ॥ यदन जिवो वलति गति नाराहु ने ००००

र	वं	मं	पु	ह	श	श	र	के	०००	वासु	सूर्य	काल	००
मु	मु	ह	त	ग	ग	ज	भु	ग	०००	कर्त्ता	करारु	शज	००
१-	१२	११	१०	८	८	४	५	६	०००				
क	रिपु	कपिनय	धो	६	भा	मां	त	०००		खर	१३	स७	०.०

ॐ
शाहामको **३०** पित्रभादिहमानि च द्विदेवजपभजवाश्चमुमुक्षुषु फौहः हरिमवाधित
श्चमैत्रतस्युजसद्वलाचसुभादुयुक्तमैजः ॥ **३८** ॥ ना **३०** नौ **६०** निधिराश्चय
१२० नमुक **१५०** मितैः स्वासुपर्व्यायकैश्चौ सभवातोनालादुदितिरथपथगुपर्व
नराधोयत्र ॥ सत्यासानावनोतोहृदयकमलेष्वयत्र एकनतेनास्वासानानाभि **२००** सं
ख्यां नतरस **१८००** क मलः हनिशस्त्रिभ्रमोत्रा ॥ **३९** ॥ इन्द्रादिगदलं चरेस्वसनेरणायभो
लंरूपेऽथविषायमुद्गमाय ॥ चतोमवेत्कयपितुंचनं पास्यदापत्रद्वयांतरचरेतुमुद्
यरस्ये ॥ **४०** ॥ धाराम्युनीसुभोमहेविमिश्रितं पलफलो मउन्मभश्चदः खदेनतेस्वरास्त्र
ध्वेदमिः **४१** ॥ द्वेदपत्रे इनेह्रवहतिह्रितयोपञ्चपचेति ध्वघोनाकी **१०३** धीक्षरोत्तमा

सुरपवनताराशर्वहीकथ्यतेऽनशुक्लाश्चित्रिध्वस्यैहिमग्न्यपरविप्रत्पुवश्चेत्तपवतः
 श्रवः स्यादेकनामायादिबहुतिशिरवीयश्चधस्यैमिति सार ॥४२॥ अर्कः ३ गित तत्प
 हनेहैरहेननायैकोपिहंतिसवहनिर्किमहात्रचित्रम ॥ शनैरिपुण्यपतिनामपि
 बहधप्रश्नेनिदिन्यविदिनयतिनसमरिदरोन ॥४३॥ प्रह्मचन्द्रेवहेतुवामगनरे
 लोतयोनिश्रितम ॥ सूर्यददिनस्रगतेराकृष्णाविजयीसन्वस्थदुतेधनति ॥ सूर्ये
 नद्विषमक्षराणिशिरानिवृत्तेसमौनंध्रुवम् ॥ तितासौपुरतोपिनामइहास्याम्य
 जोदक्षिराः ॥४४॥ प्रह्मेश्वसान्तगीमेवेज्जापापभंगोतिर्यान्त्यगसन्दमानोदेतत् ॥
 लाभः पुत्रदेश्ववेहस्यदत्तपय्यस्तुतः शुन्यगस्यासिद्धिः ॥४५॥ चन्द्रवेहधपवित्त्वक

नगेत्येष पहाभिषेकमुखकर्मभवकुम्भं यत् ॥ शौरे तु नृजनवधूरतिमुक्तपुष्पं मुखं भ
 वेदशुभकर्मफलं यस्य स म ॥ ४६ ॥ वेहति शशिनिवास्वदुःखायाः नरस्य दुःखानि
 तु कुर्यात्स त्रकाले रतेषु श्रवति मेदलधारां निर्मरं साधुं सा यदि शिखिनवनीतीभक्ति
 वन्भाविता स्यात् ॥ ४७ ॥ सुप्रापानि जवहदस्मरस्मिना ज्वावन्देधं नो गतपि वतदाती
 म ॥ अमसौर्वसपतितामिपंचकान्तं चन्द्रेण द्यमसिोवहमुहपि वती ॥ ४८ ॥ मोहनं
 मदलपुष्पमचिरेतस्तु धीरणा ॥ पदुचेद्यम ॥ प्रोक्तमादुपैयति मैथुनं राववेतर
 एतां सुविहता ॥ ४९ ॥ सरक्षाया निजार्कं नु योगीनी राहुभुवलेः ॥ अन्मैश्च दत्त
 मा जं धं जं पेते वधने भुः ॥ ५० ॥ अथ अथौ वधी वलम ॥ आसेता लजटा वधके ज रं

स. १०

१०

शीर्षे धरवाग्निरिक्कं मलेऽङ्गुलं स्पृष्टुं रगे न्न सधृतैः मुक्तैरजीरैश्चतैः ॥ कंथाप्युत्तरं
 मलिकानिरशनेः पुष्पाङ्क्याताधत्तामधवासहतं दुलाम्बुभिरपोपाठजटापीठ
 शीत ॥ ५५ ॥ अंकोला नदसरणापुरासर्पादनीशिषिकंडिका ॥ विष्णुक्राताकाका
 जधानीलीदेवीचपादलो ॥ ५६ ॥ भजास्वमूर्द्धगाभुक्तातगुटेकापिवारयेत् ॥ रतो
 दारुणशस्त्रोन्नतजावजीर्णतिनोदरे ॥ ५७ ॥ स्वर्णभिसिंहकाकीरिसिंहधूम
 स्वतगंठ ॥ अन्तस्थपारदः शिख्यमुद्रोपवरास्पगः ॥ ५८ ॥ यक्रमईकगोजि

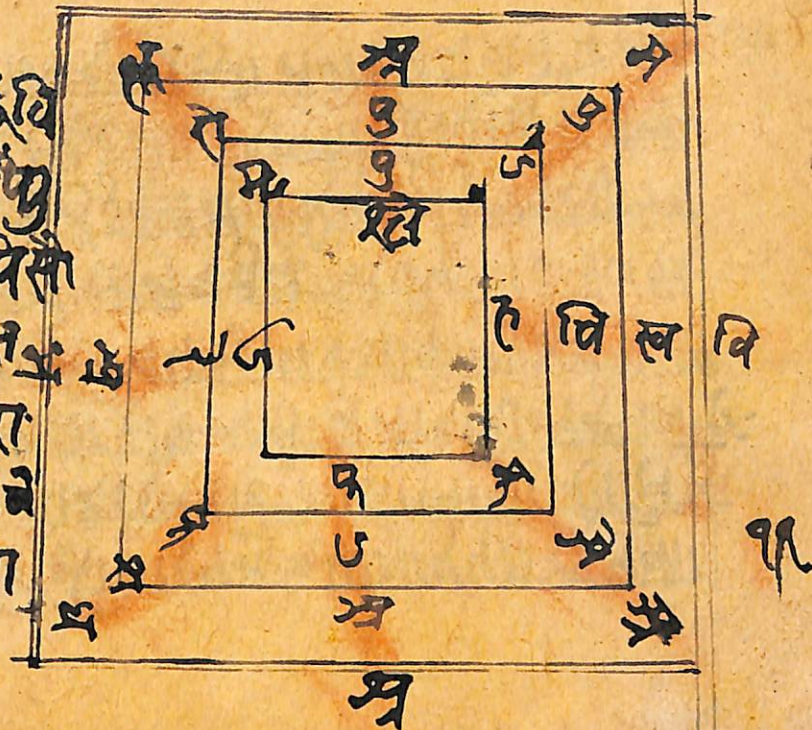
१०

काशिविष्णुपितृजगता॥ एकैकावाद् जयदापुर्व्याकीर्तास्यमङ्गाः॥५५॥ स्वयको
 टचक्रम॥ म०७० श्रोत्राणिप्रतिबेदेदुपपुर्विरिन्त्रीशीरीशरीस्यनिभाद्वात्प्रीतिरिति
 न्तराङ्गिबभूवीररातौव्येनचसाप्येवहिः॥ आग्नेयादपिअतीर्येमदिशिन्यस्येवहिः
 सप्रमंमैत्राह्वाप्तवतो न्ययोख्य १२ बहिर्दि मध्यमंतेवपदम्॥५६॥ कौशाभाणिप्र
 वेष्टेसुर्वादेशभानिनिर्गमे॥ षष्ठंषष्ठं सप्तमेषुमध्येस्तमचतुष्टयम्॥५७॥ षष्ठंषष्ठं
 रात्रौयकृतिकादौप्रथमंदुर्गमेववैरिमवा॥ मचक्रमुदस्थमोलिखेच्चतुस्त्रंवररात्र
 मध्येमंस्थात्॥ दुर्गनामस्मितंवरणीयदुर्गादीरितस्फुटम्॥ तदाशादिलिखेच्चक्रम
 मास्यरविचरौः॥५८॥ क्रूरान्तराङ्गीत्यगाःसौम्यखेटादुर्गमं गोव्यस्यकेवंप्रतिपात॥

सं० १०

११

कुरा नो ध्ये व प्राग्गः सीवे द्यः भेदो भूः प्रचात्र युधं वि
 नापि ॥६०॥ व्यसाक्षेत्यावेके कस्य व भंगो दुर्गो पि
 न्नेवे न्नात्र मिथ्या ॥ प्राकारे तः कुरवे द्यः च मध्ये सौ
 म्यारवं डीः स्यो न्ना दुर्गो स्य भूः व प्रे सौ म्या वा त्यतः
 अथ कुरा भूः सौ म्यो स्या द्वास्तु ॥६१॥ व प्रे कुरा
 व प्र मध्यतु सौ म्या तु व्यं दुधं द्यं डि पा तो त्व हं ने
 तु स्या वा स्यं तर्प द कुर सौ म्या संधि र्वा च्यो पा



अ	क	त	न	आ	उ	उ	अ	अ	०	० ०
भ	उ	अ	क	क	ह	उ	उ	न	०	० ०
अ	ल	ल	क	मि	क	ल	म	उ	०	० ०
र	व	मे	प्रो	नू.मं	ओ	तं	०	उ	०	० ०
उ	र	मि	शुश	कश	मम	क	व	ह	०	० ०
प	श	कुं	अः	मक	अं	तु	र	चि	०	० ०
श	ग	र	म	ध	क	र	त	स्वा	०	० ०
ध	म	व	ज	म	उ	न	म	वि	०	० ०
इ	अ	अ	उ	उ	नु	ओ	अ	इ	०	० ०

के१ जीवितं रवे रतीर
 जोमनिर्भवेद्यति-
 थांमरणाभिधापार
 प्रातः०००तोखाधनि
 निषंताप्रांजलेखादि
 रेहकोकनयनेनप
 किततरंकायानरं

सं २०

१४

६	६	६	०	३	४	४	०	०	२	३	६	३	२	४	७	६	४	३	१	०	१
अ	आ	इ	ई	उ	४	६	६	ओ	ओ	अं	अ	आ	इ	ई	उ	४	६	६	ओ	ओ	अं
क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	ट	ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	न	प	फ
६	३	६	रा	त	थ	३	ध	न	प	फ	६	३	६	रा	त	थ	३	ध	न	प	फ
व	भ	म	य	३	३	व	श	ष	स	ह	व	भ	म	य	३	३	व	श	ष	स	ह
२	२	५	०	१	२	१	०	४	४	३	इति	सा	धां	सा	धा	च	क	म	॥	०	०

इति सर्वतो मध्यक्रमः ॥ ६ ॥ पश्यति ॥ तत्कलां शक्यं रास्यपा र्वाहृदपाभावेदरलोकीर
 स्वदिक १० भू १ राम इति रसनाः शिरोविगमतो मासास्तु य इति वाति ७ ॥ हृदपांधुद

इति रुमम

१४